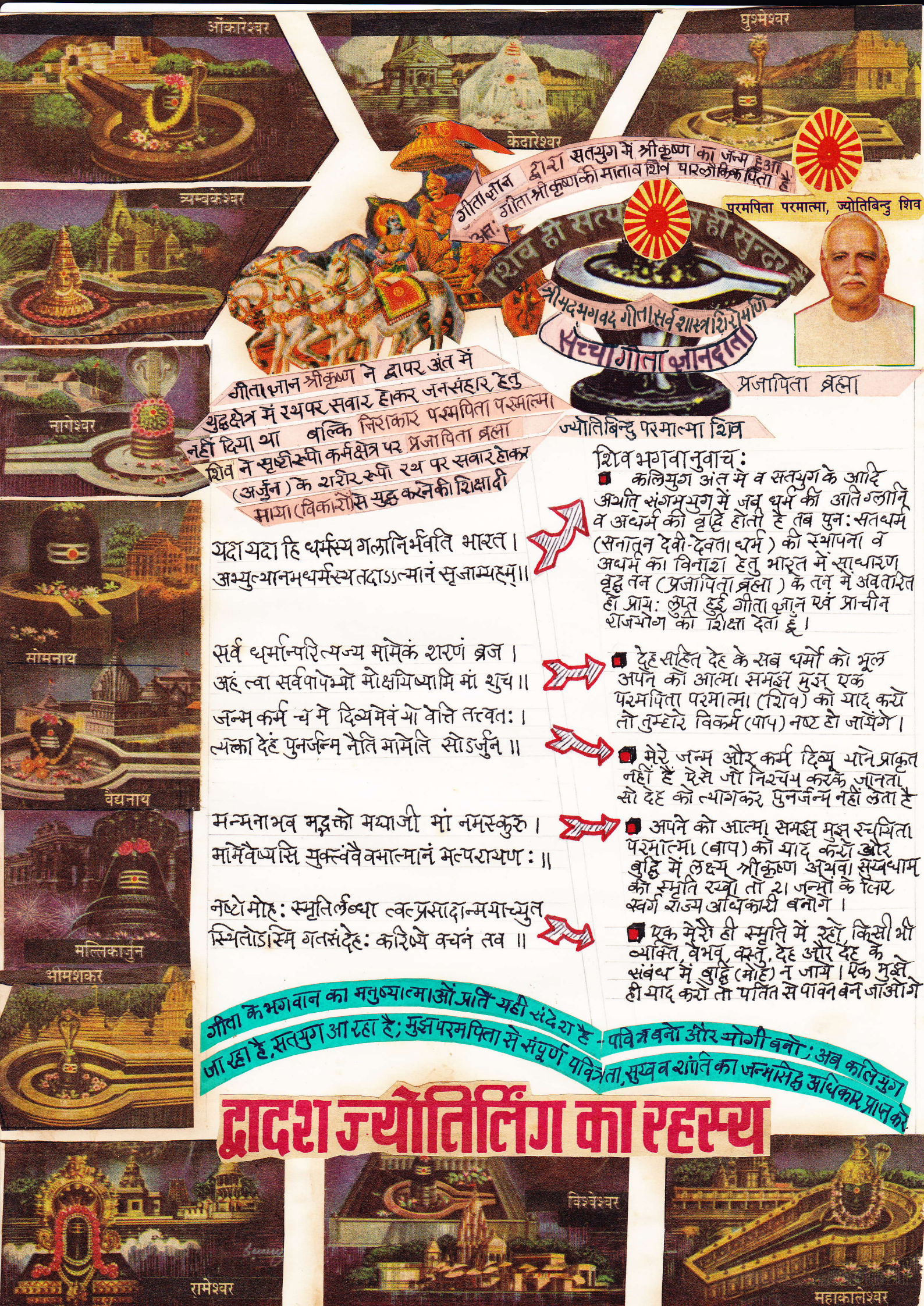

गीता ज्ञान द्वारा सतयुग में श्रीकृष्ण का जन्म हुआ
अत: गीता श्रीकृष्ण की माता व शिव परलौकिक पिता हैं

परमपिता परमात्मा, ज्योतिबिन्दु शिव

प्रजापिता ब्रह्मा

गीता ज्ञान श्रीकृष्ण ने द्वापर अंत में
युद्धक्षेत्र में रथ पर सवार होकर जनसंहार हेतु
नहीं दिया था बल्कि निराकार परमपिता परमात्मा
शिव ने सृष्टीरूपी कर्मक्षेत्र पर प्रजापिता ब्रह्मा
(अर्जुन) के शरीर रूपी रथ पर सवार होकर
माया (विकारों) से युद्ध करने की शिक्षा दी।

ज्योतिबिन्दु परमात्मा शिव

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदाऽऽत्मानं सृजाम्यहम्॥

सर्वं धर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मां शुच॥

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वत:।
त्यक्ता देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन॥

मन्मनाभव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायण:॥

नष्टो मोह: स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत
स्थितोऽस्मि गतसंदेह: करिष्ये वचनं तव॥

शिव भगवानुवाच:

- कलियुग अंत मे व सतयुग के आदि अर्थात् संगमयुग में जब धर्म की अति ग्लानि व अधर्म की वृद्धि होती है तब पुन: सतधर्म (सनातन देवी-देवता धर्म) की स्थापना व अधर्म का विनाश हेतु भारत में साधारण वृद्ध तन (प्रजापिता ब्रह्मा) के तन में अवतरित हो प्राय: लुप्त हुई गीता ज्ञान एवं प्राचीन राजयोग की शिक्षा देता हूँ।
- देह सहित देह के सब धर्मों को भूल अपने को आत्मा समझ मुझ एक परमपिता परमात्मा (शिव) को याद करो तो तुम्हारे विकर्म (पाप) नष्ट हो जायेंगे।
- मेरे जन्म और कर्म दिव्य याने प्राकृत नहीं हैं ऐसे जो निश्चय करके जानता सो देह को त्यागकर पुनर्जन्म नहीं लेता है
- अपने को आत्मा समझ मुझ रचयिता परमात्मा (बाप) को याद करो और बुद्धि में लक्ष्य श्रीकृष्ण अथवा सुखधाम की स्मृति रखो तो 21 जन्मों के लिए स्वर्ग राज्य अधिकारी बनोगे।
- एक मेरी ही स्मृति में रहो, किसी भी व्यक्ति, वैभव, वस्तु, देह और देह के संबंध में बुद्धि (मोह) न जाये। एक मुझे ही याद करो तो पतित से पावन बन जाओगे

गीता के भगवान का मनुष्यात्माओं प्रति यही संदेश है - पवित्र बनो और योगी बनो; अब कलियुग जा रहा है, सतयुग आ रहा है; मुझ परमपिता से संपूर्ण पवित्रता, सुख व शांति का जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त करो।

द्वादश ज्योतिर्लिंग का रहस्य